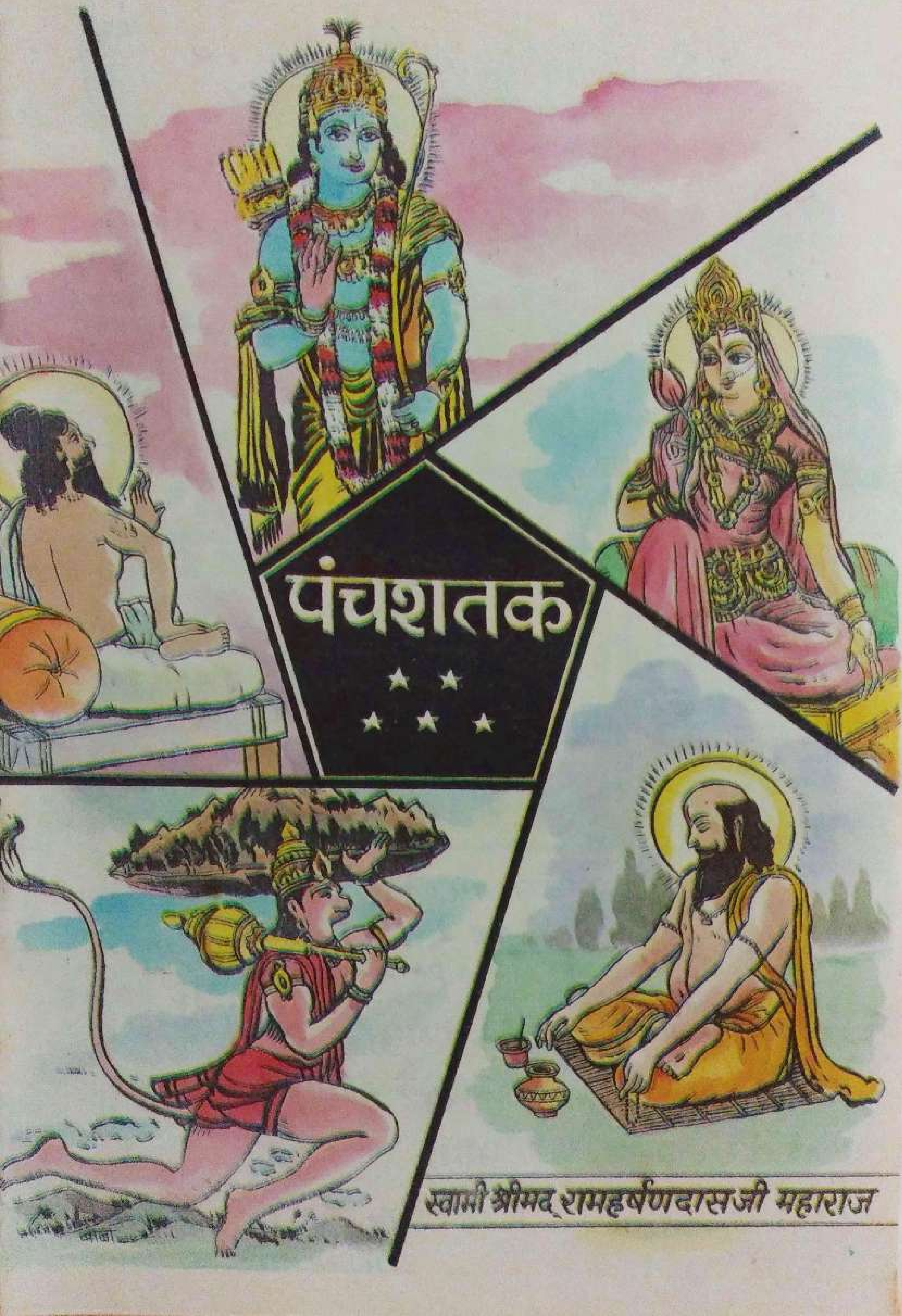


पंचशतक

स्वामी श्रीमद् रामहर्षणदासजी महाराज

पुस्तक प्राप्ति स्थान

श्री रामहर्षण सेवा संस्थान
परिक्रमा मार्ग नया घाट
अयोध्या(उ.प्र.) - मो. 7800126630

ॐ

।। श्री रसिक जनवल्लभाभ्यां नमः ।।

श्री रसाचार्येभ्यो नमः

पंच शतक

श्रीमद् रामहर्षण दास

स्वामिना प्रणीतं

स्थानः-श्री राम हर्षण कुञ्ज, नयाघाट, श्री अयोध्या

सं.-२०५०

प्रकाशकः महन्त श्री हरिदास जी,
श्री रामहर्षण कुञ्ज, परिक्रमा मार्ग
नयाघाट, श्री अयोध्या

* न्यौछावर सात रुपया मात्र

* प्रथम संस्करण, १००० (मई १९८६)

* द्वितीय संस्करण, २००० (अक्टूबर १९९३)

* मुद्रक : अनुज प्रिन्टर्स
क्राऊन गेट, ९८, जगत नारायण रोड
सिटी स्टेशन
लखनऊ फोन : २६७२२४

ॐ गुं गुरवे नमः
ॐ नमः सीतारामाभ्यां
ॐ हं हनुमते नमः

।। अथ सद्गुरु शतक ।।

दोहाः— *सब समर्थ सद्गुरु चरण, बन्दौं बारम्बार।*
दीन हीन मोंहि जानि कै, अबकी लेहु उबार।।

।।चौपाई।।

जय गुरुदेव शरण सुखदायक । प्रणतपाल सद्शिष्यन नायक ।।
ब्रह्मानन्द स्वरूप सम्हारे । प्रकृती पार प्रकाश प्रसारे ।।
परमानन्द दान के दाता । दानि शिरोमणि दीनन त्राता ।।
सच्चिद आनन्द विग्रह वाना । विश्व आतमा तेज निधाना ।।
ज्ञान मूर्ति गुण-गेह गँभीरा । कैवल रूप एक रस धीरा ।।
द्वन्द्वातीत अलिप्त अमानी । जय गुरुदेव परम विज्ञानी ।।
गगन समान महान स्वरूपा । आदि अन्त नहिं कोउ निरूपा ।।
तत्वमऽसि के लक्ष्य यथारथ । वर्णत वेद तत्व परमारथ ।।
नित्य एक अरु अचल सनातन । विमल बोधमय रूप में रातन ।।
सर्वभूत मय सर्व प्रकाशक । साक्षी भूत सुबुद्धि विकासक ।।
सर्व भाव ते अहैं अतीता । त्रिगुण रहित सद्गुरु श्रुति गीता ।।
जय गुरुदेव जगत के स्वामी । घट-घट बसत सुअन्तर्यामी ।।
तिहरो भेद न कोऊ पावैं । मन वाणी के तर्क न आवैं ।।
अकथ अचिन्त्य अनाम अनादी । अहैं प्रभो परमारथ वादी ।।
सब समर्थ निष्कल निरुपाधिक । मगन समाधि न माया बाधिक ।।
जहाँ जाय नहिं लौटत जीवा । सोइ परम पद सद्गुरु सीवा ।।
अक्षर अच्युत अरु अव्यक्ता । आपु अहैं निज रूप में रक्ता ।।

सदा स्वतन्त्र सुशान्ति स्वरूपा। सीमा हीन अनन्त अनूपा ।।
जेहि पर कृपा कटाक्ष तुम्हारा। परै हेतु बिन मोक्ष को द्वारा ।।
सोइ जानै सद्गुरु तव रूपा। सदा अनुभवै सुखद स्वरूपा ।।
तुमहिं जानि तुमही ह्वै जावै। भेद भावना तुरत नसावै ।।
माया जाल जगत अरुझाने। ते किमि जानहिं तुमहिं अयाने ।।
देहेन्द्रिय मन बुद्धि विलक्षण। जानत सद्गुरु रूप विचक्षण ।।
शिव स्वरूप जय ज्योती परमा। परम तत्व श्रुति जान न मर्मा ।।
आत्म गुणन संयुक्त सर्वदा। तथा आत्म तन नित्य नर्मदा ।।
आत्म केलि रत नित्य विलासी। जय गुरुदेव आत्म अविनाशी ।।
कारण-कार्य सूक्ष्म-स्थूला। निर्गुन सगुण ते पार अतूला ।।
सत अरु असत परावर पारा। भेद चलाचल नहिं अविकारा ।।
द्रष्टा-दर्शन दृश्य की त्रिपुटी। सद्गुरु हृदय न एकहु उपटी ।।
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय को रूपा। रहै विलीन सुगुरु अनुरूपा ।।
प्रमेय प्रमाण प्रमाता प्रभु में। नाहिं अखण्ड एक रस विभु में ।।
द्वैता द्वैत भेद ते शूने। नित्य एक अज पूनम पूने ।।
अस सद्गुरु लै नर अवतारा। स्वेच्छा हरत भूमि को भारा ।।
क्षमा-दया-करुणा उर धारे। विचरत जग निर्पेक्ष सुखारे ।।
शम-दम-संयम नियम स्वरूपा। गुणन-गेह सन्तन अनुरूपा ।।
बोलनि मिलनि रहनि अरु करनी। जग आकर्षति श्रुति आचरनी ।।
भक्ति ज्ञान वैराग्य अगारा। रह निर्वैर शान्त सुख सारा ।।
समदर्शी सबके हितकारी। सहनशील षट सम्पति धारी ।।
अहंकार ममकार विहीना। बिना वासना परम प्रवीना ।।
जीवन्मुक्त जगत उजियारे। जय गुरुदेव जगत उद्धारे ।।
त्रय अकार सम्पन्न स्वभाये। कर्त्ता भोक्ता भाव भुलाये ।।

आपुहि ज्ञाता कर नहिं मानैं । आचारज अभिमान न आनै ।।
अतिहि अकिंचन बने अमानी । आर्ति दशा स्थित सुख खानी ।।
अति अनन्य रघुवर के दासा । तिनहिं त्यागी नहिं दूसरि आशा ।।
राममन्त्र अर्थहिं अनुरूपी । स्थिति कीन्हें वरण अनूपी ।।
मन्त्र-भक्त, गुरु- भक्त सुजाना । साधु सेव उर भावहिं आना ।।
शास्त्र - वेद की करत बड़ाई । तासु अर्थ लीन्हें अपनाई ।।
शिष्यन कबहुँ छोट नहिं मानै । भगवत-भक्त भाव बड़ आनै ।।
शिष्यहिं निज आचार्य के जानी । सेवत श्रुति की बात बखानी ।।
आपनि गिनै न शिष्यन पूजा । गुरु की जानत नहिं कछु दूजा ।।
प्रभु प्रसाद ते तन निर्वाहा । करत सदा सन्तोष न चाहा ।।
अहंकार ते अर्पित धान्या । शिष्यहुँ ते नहीं लेत अमान्या ।।
अपराधिहु कर अहित न सोचे । शिष्य वछलता उर महँ रोचै ।।
शरणागति लै इष्टहिं प्रेरी । हित प्रिय करत शिष्य को तेरी ।।
विचरि विचरि जग जीव सेचता । करत पठावत हरी निकेता ।।
वक्ता परम भाव भल सोधा । श्रोता उर उपजत वर बोधा ।।
हरि अरु जीवन कर उपकारा । सद्गुरु करत न अहं अकारा ।।
सब समर्थ तउ नैच्यहिं ध्यावै । दीन रूप बनि प्रभु अपनावैं ।।
रटत राम हा राम हमारे । तुम बिन मो कहँ कौन उबारे ।।
नाम रूप प्रभु लीला धामा । रमत समाधि लगै अठयामा ।।
कीर्तन व्रती अर्थ को ध्याई । प्रेममयी स्थिति अपनाई ।।
प्रेम-प्रकाश प्रकाशित काया । सात्विक चिह्न छनहिं छन छाया ।।
विरह दशा प्रभु की प्रकटाई । जय गुरुदेव देह बिसराई ।।
जय रस रूप रसिक सिर ताजा । रसमय होत जो संग बिराजा ।।
तेज पुञ्ज सुन्दर तन सोहै । चरण-कमल का कह नहिं मोहैं ।।

दिव्य सुगन्धित सकल शरीरा । सुख स्पर्श हरत जन पीरा ।।
रसिक विना सद्गुरु रस स्वादा । जानि सकै नहिं भव अहलादा ।।
दै निज दर्शन जीवन पापा । नासत दैन्य शोक संतापा ।।
जय गुरुदेव कृपा आगारा । हरत मोह निज वचन के द्वारा ।।
ध्यान मूल गुरु मूर्ति त्रिसत्या । बनी ब्रह्म रस की अभिमत्या ।।
पूजा मूल गुरू की अर्चा । प्राठ मूल सद्गुरु की चर्चा ।।
मन्त्र मूल गुरुवर की बानी । जेहि ते प्रकट शास्त्र श्रुति ज्ञानी ।।
मोक्ष मूल गुरु कृपा भलाई । तत्सुख सुखी करिय सेवकाई ।।
गुरु बिन भव सागर ते पारा । कौन करै रमि जगत मझारा ।।
विधि-हर सरिस बड़ो किन कोई । गुरु बिन भवके पार न होई ।।
तरन हेतु भव सागर काही । गुरु सम्बन्ध मात्र भल आही ।।
जा कहँ लिय सद्गुरु अपनाई । ता कहँ त्याग न सक हरिराई ।।
कृपा पात्र आचार्य को जानी । करहिं कृपा प्रभु आपन मानी ।।
लखि वैभव श्री सद्गुरु केरा । ललचि परत हरि हू हिय प्रेरा ।।
कहुँ-कहुँ बनि आचार्य सुभाषा । पूर्ण करत उर की अभिलाषा ।।
शरण योग श्री सद्गुरु चरणा । मन-वच-कर्म अन्य नहिं वरणा ।।
सद्गुरु ध्यान धरन के योगा । लगै समाधि मिटै सब शोगा ।।
भजन कीर्तन योग श्री गुरुवर । परम जाप्य तारक गुण विभुवर ।।
आश्रय लहि आसक्त स्वभाया । प्रेम योग सद्गुरु सुखदाया ।।
सद्गुरु नाम रूप अरु लीला । धाम सहित शिष्यन सुख शीला ।।
गुरुतजि आस करै जो आना । हरि श्रुति केर करै अपमाना ।।
गुरु-स्वरूप को भयो न बोधा । काह कियो बकि शास्त्रन सोधा ।।
जप-तप संयम नियम समाधी । ज्ञान विराग जोग व्रत साधी ।।
व्यर्थ भये श्रम मात्र जनाये । जब लौं गुरु की कृपा न आये ।।

तेहिं ते गुरु कहँ करें प्रसन्ना । सब विधि है अनुकूल प्रपन्ना ।।
सो दयाल जीवहिं अपनाई । सबहिं भाँति ते करैं भलाई ।।
अस प्रभाव सुनि शरणहिं आयो । दास राम हर्षण अकुलायो ।।
त्राहि त्राहि सद्गुरु महराजा । मैं अनाथ दुखियन सिरताजा ।।
अति अज्ञान रूप अँधियारा । नाशहु दै निज ज्ञान उजारा ।।
जो मम करनी निज उर धरिहौं । तो प्रभु कल्पन नाहिं उबरिहौं ।।
रक्षहु नाथ देखि निज ओरी । आयो ताकि शरण मैं तोरी ।।
जेहि विधि ते हित होइ हमारो । सोई करण प्रभु हृदय विचारो ।।
रहि हौं परे तिहारे द्वारा । ठुकरावहु या कीजहु प्यारा ।।
दास चहत परमारथ कौरा । दीजिए द्वार देखि मम ओरा ।।
मोरे मनहिं परम विश्वासा । पुरिहैं सद्गुरु सिगरी आसा ।।

दोहा- सद्गुरु शरणहिं आय के, जाब न औरन द्वार।
दास राम हर्षण सुखी, लहि कै प्रीतम प्यार।।
सद्गुरु शतक सुप्रेम ते, पढ़ै सुनै जो कोय।
भक्ति ज्ञान वैराग्य उर बढ़ै भवहिं को खोय।।

इति सद्गुरु शतक

ॐ नमः सीतारामाभ्यॉं
ॐ हं हनुमते नमः
ॐ गुं गुरवे नमः

।। अथ हनुमान शतक ।।

दोहा- भक्ति ज्ञान वैराग्य बल, श्री यश तेज स्वरूप ।
पवन तनय संकट हरण, सुमिरौं भक्तन भूप ।।

।। चौपाई ।।

जय हनुमान अञ्जनी नन्दन । शंकर सुवन जयति जग वन्दन ।।
जय जय सीताराम उपासी । अति अनन्य प्रभु-प्रेम प्रकाशी ।।
जयति धर्मतः रघुवर दासा । निपुण सकल सेवातजि आसा ।।
जयति कर्मतः कथा विलासी । करत अहार सोइ सुख रासी ।।
यत्र यत्र सिय राम कीर्तन । तत्र तत्र द्रुत पहुँचि पुलक तन ।।
अञ्जलि मस्तक सजल सुलोचन । सुनत सदा श्री संकट मोचन ।।
रामभक्त जिनके वर बान्धव । जयतिजयति जयसुन्दर साधव ।।
सकल भाग्य श्रीराम प्रसादा । भोगत भाव भरे अह्लादा ।।
प्रेमा परा भक्ति भल जाना । पंच रसन के रसिक सुजाना ।।
भक्तिहिं बल अपने वश कीने । सीता रामहिं परम प्रवीने ।।
तत् सुख सुखी भाव हियआनी । रहत स्वामि सेवक सुख सानी ।।
जय जय जय केशरी कुमारा । पायो प्रभु कर छोह अपारा ।।
ज्ञान निधान ज्ञान के रूपा । ज्ञानि शिरोमणि सुखद स्वरूपा ।।
ज्ञान भानुकी किरण बिखेरी । देत दास के हृदय उजेरी ।।
जय जय हनुमत परम विरागी । तृण समान तीनहु गुण त्यागी ।।
श्रुत अरु दृष्ट वितृष्ण भली विधि।यद्यपि दासी अठसिधि नवनिधि।।
सहज ब्रह्मचारी कपि जय जय । तुम समान तुम जगत जयोजय ।।

दीयमान स्वारथ परमारथ । त्यागि लियो प्रभु प्रेम यथारथ ।।
योग निरत योगीश सुजाना । पात्रहिं दायक योग विताना ।।
जयजय पवन तनय बलवाना । जेहि सम उपमा और न आना ।।
जय बज्राङ्ग वीर वर बाँके । विजय ध्वजा तव फहरति नाके ।।
बाहुन विक्रमविदित त्रिलोका । सुनत हाँक कंमत गिरि ओका ।।
रघुवर रावण युद्ध मझारी । तथा महाभारत की रारी ।।
सुरनर मुनि सब लखे वीरता । शत्रु समाज न रही धीरता ।।
वरषि सुमन जयजयति उचारे । स्वर समवेत गगन गुंजारे ।।
जय हनुमान बाहु गिरधारी । त्रिभुवन विदित प्रताप अपारी ।।
बालक पने लील लिय भानू । पुनि सुर कहे तजेउ हनुमानू ।।
उग्रवीर जय मृत्यु के मृत्यू । को जाने प्रभु तिहरो कृत्यू ।।
तेज–अग्नि दशदिशहिं प्रकाशै। विमुखन कहँ क्षणमाहिं विनाशै ।।
राम भक्त रक्षन के काजा । पंच मुखहि सोहत कपिराजा ।।
अघटित–घट अरुघट अघटाई । नेति नेति कर वेद बड़ाई ।।
सब समर्थ प्रभु मारुत नन्दन । जयतिजयति जय दुष्ट निकन्दन ।।
जयति प्रभञ्जन सुत श्रीमाना । श्रीयुत करत जो दीन दिखाना ।।
सुरनर मुनि शारद श्रुति शेषा । विधि हरिहर दिगपती दिनेशा ।।
भरत लखन सिय दशरथनन्दन । गावत तिहरो यश जग वन्दन ।।
जय जय व्यापक कीर्ति के रूपा । सब प्रकार प्रभु अहौ अनूपा ।।
अग्नि सूर्य सम तेज प्रकाशा । तव तन दिखत प्रकट परिभासा ।।
वर विज्ञान प्रकाश की मूरति । मंगल मय आनन्द की सूरति ।।
अमृतमय रसमय सब भाँती । सदा निरामय विभव विभाती ।।
क्षमा दया कृप करुणा आकर । शमदमादि दिवि गुणन के सागर ।।
मनहु ब्रह्मरस तव तन धारे । सोहत धरा बीच सुख सारे ।।

जयजयप्रभु रसिकन सिरमौरा । जय जय रघुपति चन्द्र चकोरा ।।
प्रपति धर्म के जानन वारे । जय शरणागत वत्सल प्रभु प्यारे ।।
विपति समय सुग्रीव के साथा । नहिं छोड़यो तेहिं जानि अनाथा ।।
रामहिं मिलि कपि कार्य सम्हारेउ । राव बनाय दुसह दुख दारेउ ।।
सिय वियोग स्वामिहिं दुखसाने । देखि दुखी ह्वै वचन बखाने ।।
मौहिं सह श्री सुग्रीव तिहारा। दास अहै सब भाँति उदारा ।।
सो सब विधि प्रभुसेवा करई । सियहिं मिलाय नाथ दुख हरई ।।
रामकृपा-बल लहि हुनमाना । सीतहिं खोजन चल्यो सुजाना ।।
निजकर परसी कियो पवित्रा । किय सपंख गृद्धहिं गुनि मित्रा ।।
तेहि मुख श्रीसीता सुधिपाई । लंकहिं चल्यो अधिक अतुराई ।।
लाँघत कपिशतयोजन सागर । सुरसा खड़ी मार्ग महँ आकर ।।
बुधिबल ते तेहि दियो हराई । आशिष लहि के चल्यो त्वराई ।।
आगे मारि सिंहिका वीरा। गयो सिन्धु के पार सुधीरा ।।
अहह अनश्वसन खड़े निहारी । स्तुति किये देव जय कारी ।।
मुष्टिक मारि विरोधिनि लंका । निज वश कियो वीर वर वंका ।।
प्रविशेउ नगर कपिन्हँ कर राजा । लहि सिय दरश भयो कृत काजा ।।
निशिचर मारि सकलपुर जारा । मच्यो लंक महँ हा हा कारा ।।
दै मुदरी संदेश सुनाई । सीतहि धीरज बहुरि बँधाई ।।
चूड़ामणि लै चल्यो त्वराया । कूदि सिन्धुमहि पारहिं आया ।।
किलकिलाय गर्जेउ अति भारी । सुनत कपिन्ह भो हर्ष अपारी ।।
मधुवन फल खायो बलवाना । कपिन समेत हरषि हनुमाना ।।
गयो बहुरि जहँ लछिमन रामा । कियो लकुटि इव दण्ड प्रणामा ।।
सिय सुधि पाय राम रघुवीरा । भये सुखी बह नयनन नीरा ।।
पुनिपुनि कपि कहँ हृदय लगायो। शीश सूँघि अतिशय दुलरायो ।।

नाहिन उऋण कहेव कपि तोहीं । निजकहँ धनी ऋणी गुनमोहीं ।।
सुनि सुख पाय सकुचि शिर नावा । पवन तनय रघुपति मन भावा ।।
प्रभुहिं लिवाय लंक मँह जाई । कियो नाश निशिचर समुदाई ।।
रावण राज विभीषण पावा । कपि की कृपा कुशोक नसावा ।।
चढ़ि विमान सिय लखन समेता । चले राम पुर कृपा निकेता ।।
आगे चलि हनुमान गोसाँई । भरत भरत कहँ दियो जियाई ।।
सिंहासन पर त्रिभुवन साँई । सिय समेत राजे रघुराई ।।
देखि प्रहर्षे हिय हनुमाना । नृत्यन लगे भूलि सब भाना ।।
सुर नर मुनि सब जय जय कीन्हे ।अति अनन्य प्रभु किंकर चीन्हे ।।
लहि कारण नख हृदय विदारी । सबहिं दिखायो अचरज भारी ।।
सुन्दर सीय राम की जोरी । कपि उर लखे जनन सुख बोरी ।।
राम नाम अंकित सुशरीरा । राजत रवि सम तेज गँभीरा ।।
त्रिभुवन जयजय कार मचायो । वरषि प्रसून विपुल यश गायो ।।
गाधि तनय के क्रोध भाजना । काशिराज की भई विडम्बना ।।
मातु रजाय नाम बल ताही । रक्षेव कथा प्रकट जग माहीं ।।
राम नाम ते रामहु हारे । दियो दिखाय जगत उजियारे ।।
जब लौं रहे रामं रघुराजा । अवध पुरी शाशत सुख साजा ।।
तब लौं सबहिं भाँति की सेवा । अष्टयाम कीन्ही मन देवा ।।
अन्त समय प्रभु आयसु पाई । सहि प्रभु विरह रुके कपिराई ।।
उत्तर दिशा गंध मादन गिरि । कदली वन निवसत कपि ह्वै थिरि ।।
राम रजाय राम की लीला । जेहि अनुकरण कहें मुनि शीला ।।
नित्य करत तहँ हरि हनुमन्ता । लै गंधर्विन प्रिय सिय कन्ता ।।
कथा कीर्तन रस में छाके । अजहुँ विराजत बुधि बल बाँके ।।
सुमिरत संकट हरत जनन के । कृपा सिन्धु भंडार गुनन के ।।

राम भक्त पर संकट देखी । बिना विनय द्रुत नशत विशेषी ।।
शरण शरण हौं शरणहि आयो । काल कर्म गुण आदि सतायो ।।
दैहिक दैविक भौतिक शोका । व्यापि रहे मोंहि पापन ओका ।।
रक्षि राम रति देहु अमायिक । संतन संग सदा सुख दायिक ।।
हृदय गगन मोरे रघुराया । सिय सह बसैं सदा कपिराया ।।
गतिमति सबशुचि संतन केरी । रहनि करनि सुख सनी घनेरी ।।
दीजै मोहिं दीनजन जानी । अतिहिं अकिंचन हिय अनुमानी ।।
कपि की कृपा अगम कछु नाहीं । अति प्रतीत मोरे मन माहीं ।।
जनम जनम दुखी है दासा । बिन प्रभु दर्शन मरत पियासा ।।
अब विलम्ब नहि कीजिय नाथा । राम हर्षणहिं करहु सनाथा ।।
जो यह पढ़िहहिं शतक सुहावन । पइहैं अवशि मनोरथ पावन ।।

दोहा- पवन पुत्र हनुमान गति, जेहिं की जग महँ होय।
स्वारथ परमारथ सकल, तेहि के सुधरे दोय।।

।। इति हनुमान शतक ।।

ॐ नमः सीतारामाभ्यां
श्री सन्त चरण कमलेभ्यो नमः

।। सन्त शतक ।।

दोहा— सन्त सुखद सब जनन के, सहजहिं सरल स्वभाव ।
यथा विटप सरि गिरि धरा, पर हित करि न अघाय ।।

।। चौपाई ।।

वन्दहुँ सन्त चरण सुखदाई । जेहि लहि सुरसरि पूत कहाई ।।
चरण रेणु जाकी सिर धारी । मानत पूत हरिहु अविकारी ।।
महिमा तासु कहै किमि कोई । जिमि नभ अन्त न पावत लोई ।।
करु नभ नखत गिनै गणितज्ञा । महि रज आँकहि बहुती प्रज्ञा ।।
गण पति शेष शम्भु श्रुति शारद । पार न पावहि बुद्धि विशारद ।।
मति मलीन कलि कलुष परायण। मैं किमि कहौं असाधु स्वभायन ।।
पावन गिरा करण के काजा । कछुक कहौं जिमि संतन साजा ।।
संत स्वभाव हरहु कहँ दुर्लभ । सब समर्थ यद्यपि श्री वल्लभ ।।
सर्व सर्व विधि हरि ते होई । शासत त्रिभुवन जिय महँ जोई ।।
पै नहिं साधु ते कैसेहु कारज । कबहुँ न होय कहैं आचारज ।।
प्रेरक प्रभु निज शक्ति सहाया । करत करावत सब रघुराया ।।
मैं अरु मोर सबहिं सब माधव । अहं हीन मानत शुचि साधव ।।
वासुदेव मय सब संसारा । भासत तिनहिं प्रकाश अगारा ।।
सर्व समय सब में भगवाना । देखहिं भक्त भाव भल आना ।।
स्वयं सु भगवद्भाव ते भावित । तैसहिं देखत जग हरि भावित ।।
भगवद्भावहिं करै प्रदाना । भगवद्भाव आचरण आना ।।
सबके उर सोये भगवाना । देत जगाय करत कल्याना ।।
हरि, जग और आपनी सेवा । करत संत यहि भाँति ते धेवा ।।

पै नहिं अहं न कछु संकल्पा । सहजहिं सेवा होति अनल्पा ।।
अहँ हीन तहँ कर अभिमाना । स्वपनेहु करत न भक्त सुजाना ।।
ज्ञान वान बिन द्वैत विरागी । तृप्त सदा आतम अनुरागी ।।
रह न शेष कर्तव्य सुकर्मा । रम्यो राम गुनि शास्त्र को मर्मा ।।
सर्व भूत हित रत मति धीरा । पर की पीर गिनै निज पीरा ।।
सब महँ स्वयं स्वयं महँ सब कहँ । लखत एक मैं मोर गयो तहँ ।।
रहैं अद्वेष चराचर जग ते । बनि अजात सत्रू भव भगते ।।
सदा प्रसन्न न शोच न कामा । ब्रह्मभूत शुभ अशुभ विरामा ।।
मैत्री मुदिता करुणा दाया । हृदय बसाये मोह न माया ।।
अहंकार ममकार विहीना । सुख दुख गिनैं समान प्रवीना ।।
सहजहिं क्षमा वसत उर माहीं । संत सहैं सबकी रिस नाहीं। ।।
शम सन्तोष विचार सुसंगति । करैं सदा नहिं कबहुँ आन मति ।।
सतत योग रत रहैं यतात्मा । दृढ़ निश्चय नहिं संशय आत्मा ।।
मन बुद्धी हरि अर्पित कीन्हे । जगत भूलि परमारथ लीन्हे ।।
नहिं उद्वेजित तिनते लोका । जग उद्वेजित लहहिं न शोका ।।
भय उद्वेग हर्ष आमर्षा । संत हृदय कहँ कबहुँ न पर्शा ।।
रहैं सदा निर्पेक्ष सुदक्षा । परम पवित्र भक्ति के पक्षा ।।
उदासीन गतव्यथा सुसंता । सर्वारम्भ तजे मति वन्ता ।।
राग न द्वेष न आसा शोचा । काँक्षा हीन न तृष्णा कोंचा ।।
त्यागि शुभाशुभ शान्ति स्वरूपा । स्थिति लीन्हें अतिहिं अनूपा ।।
शत्रु मित्र मध्यस्थ समाना । सन्त हृदय महँ भेद न आना ।।
शीत उष्ण अपमान औ माना । एक सरिस उर मान सुजाना ।।
निन्दा स्तुति तुल्य सन्त कहँ । मानत प्रकृति विकार मनहिं महँ ।।
आत्म अनात्म भयो वर बोधा । उर की ग्रन्थि छूट सत शोधा ।।

संशय भये सकल निर्मूला । कर्म बीज नाशे प्रतिकूला ।।
पाय परावर दर्शन सन्ता । भव रस भूलि भजैं सियकन्ता ।।
प्रत्याहारिणि इन्द्रिय तिनकी । हरि रस पियै प्यास छिन-छिन की ।।
सन्तन चित चित चोर चुरायो । राम रसिक रस राज लोभायो ।।
मन कौ मन मोहन लै लीन्हों । अमन साधु आपन सब दीन्हों ।।
बुद्धि विलय भे प्रभू के रूपा । करिकै वरण अनन्य अनूपा ।।
सन्त अहं बनि दास अनन्या । सेवत स्वामिहिं जगत वरण्या ।।
अहनिशि हरि परिचर्या करही । संत गुरू आज्ञा अनुसरहीं ।।
देह स्वरूप उपाय-उपेया । अहं रहित रह एक रस धेया ।।
कर्ता भोक्ता ज्ञाता आपुहिं । कबहुं न साधु अहं करि थापहिं ।।
शेष भोग्य अरु रक्ष राम के । सहजहिं मानत स्वकहिं श्याम के ।।
अगति अकिंचन आरत बनिकै । रहहिं सन्त हरि आसहिं अनिकै ।।
योग क्षेम सब भाँतिहि त्यागे । प्रभु निर्भर रह पै नहि माँगे ।।
यथा लाभ निजतन निर्वाहा । करैं सन्त बह कृपा प्रवाहा ।।
प्रति स्थिति प्रभु कृपा प्रसादा । जानत भक्त भरे अहलादा ।।
बने मत्त स्तबध विचर जग । आतमा रामहि सुलभ सुखद मग ।।
प्रेम पन्थ के पथिक सयाने । प्रेमहि रमैं इष्ट अरुझाने ।।
कहत सुनत नहि प्रेम ते अन्या । प्रेम बिना निरखत नहि धन्या ।।
अमृत भौमा सुख अवगाहत । अल्प मृतहि सपनेहु नहि चाहत ।।
रहैं अहर्निशि रमे राम महँ । सच्चिद आनँद दमकि रह्यो जहँ ।।
नाम कीर्तन व्रत कहँ लीन्हें । प्रेम मई जगती सब कीन्हें ।।
कबहुँ उच्च स्वर गावन लागैं । प्रभु अनुराग में अतिशय पागैं ।।
कहुँ रोवैं कहुँ नृत्यहिं प्रेमी । कबहुँ हँसै भूले जग नेमी ।।
विरह दशा तिन माँहि दिखावैं । हरि स्मरण भूलि तन जावैं ।।

द्रवित चित्त ते कुलिश पषाना । भक्त द्रवावहि बचन प्रमाना ।।
विरह वह्नि ते जरि गे पापा । प्रगटेव पालक सरिस प्रतापा ।।
इष्ट दरश की आशा प्रबला । नाशी पुण्य रासि फल सकला ।।
हरि दर्शन अधिकारी साँचे । भक्त ढरे प्रभु प्रेम के ढाँचे ।।
पाये सत्य परम परमारथ । जाने साँच पुरुष पुरुषारथ ।।
जहँ-जहँ जाय जगत महँ सन्ता । तहँ-तहँ प्रकटत तीर्थ अनन्ता ।।
शास्त्र सोइ जो बोलहि साधू । जाकी महिमा अगम अगाधू ।।
सोइ सुकर्म करत कल्याना । जेहिं कहँ करत सन्त मतिवाना ।।
मन क्रम वचन शास्त्र आचरणा । पृथक न होइ जगत अनुसरणा ।।
हरि सम गुण हरिजन महँ भाई । सबहिं भाँति श्रुति कह्यो बुझाई ।।
तेहिं ते तिन महँ अल्प न भेदा । भेद किये प्रभु पावत खेदा ।।
धन्य भक्त प्रभु प्राण समाना । तिनकी महिमा कोउ न जाना ।।
भगवद्रस के रसिक सुजाना । जय रस रूप सन्त भगवाना ।।
जय हरि-हृदय साधु सुख कारी । तिहरी महिमा अकथ अपारी ।।
विधि हर संकर्षण श्री आत्मा । तुम तै प्रिय नहिं कह परमात्मा ।।
सदा अधीन तुम्हारे रहहीं । सब समर्थ हरि यद्यपि अहहीं ।।
भक्तन रुख जोगवत दिन राती । यथा नचावहिं नाचहिं माती ।।
आरत हरण शरण सुख दानी । रक्षहु नाथ दीन जन जानी ।।
शिशु की आरत वाणि विचारी । दया करहु हे भव-भय हारी ।।
रावरि कृपा राम रति पावौं । अति अनन्य रघुपति गुण गावौं ।।
सीय राम रटि जिऔं जगत महँ । ध्यान धरौं मैं मोर न रहे जहँ ।।
परा भक्ति प्रभु प्रेम विलक्षण । रहैं प्रकाशत उरहिं विचक्षण ।।
पावहुँ प्रभु प्रेमिन सतसंगा । श्री हरि यश जहँ सुनहुँ अभंगा ।।
भक्तन की रहनी अपनाई । सर्वभूत देखौं रघुराई ।।

अह मम रहित इष्ट की सेवा । तिन सुख हेतु करौं उर धेवा ।।
सदा प्रसन्न रहैं भगवाना । अस कैंकर्य बनै तजि माना ।।
सबके प्रिय सबके हित कर्ता । होहु नाथ मोरेउ भव हर्ता ।।
दशन दाबि तृण गाय गोहारी । सुनहिं कृपालु शरण सुखकारी ।।
आपन कहहु मोंहि एक बारा । जेहि ते होवै मोर उबारा ।।
बिना सन्त सम्बन्ध के रामा । नहिं अपनावैं श्री सुख धामा ।।
अस विचारि मम कारज साधैं । साधु स्वभाव करै बिन राधैं ।।
सीताराम सुगुरु शुचि सन्ता । तिहरो ह्वै न रहौ जगवन्ता ।।
आये शरण की राखहु लाजा । जय जय सन्त दानि सिर ताजा ।।
राम हर्षणहि तुम तजि औरा । देवै कोउ न मागे कौरा ।।

दो.:- दीन हीन अति नीच की, विनय सन्त सुनि लेहु ।
अहं हीन निज दासता, भूखे भीखहिं देहु ।।
पढ़ै सुनै संतन शतक, संत स्वभावहिं पाय ।
बिन श्रम भवसागर तरै, राम चरण लव लाय ।।

।। इति सन्त शतक ।।

ॐ नमः सीतारामाभ्यां

ॐ नमो वीर हनुमते नमः

।। अथ सीता शतक ।।

दोहा- सीता शान्ति प्रदायिनी, सुख सम्वर्धनि हारि ।
कृपा रूपिणी करि कृपा, लीजिय मोहि निहारि ।।१।।
तम पथ ते मोहिं ज्योति पथ, लै चलु अमृत ओर ।
असत त्यागि सत को भजहुँ, निरखौं अवध किशोर ।।२।।

।। चौपाई ।।

जय सीता सर्वेश्वरी मोरी । जयति जनकजा नवल किशोरी ।।
जयति सुनैनानन्द विवर्धनि । जनक प्रसूता सुख समृद्धनि ।।
जय विदेह तनया वैदेही । आनँद कन्दिनि सहज सनेही ।।
जयति जयति निमिकुल उजियारी । जय निमिनन्दिनी प्राणपियारी ।।
जयति जानकी जीवनि जी की । जननि जनक गे देखत बीकी ।।
जयजय श्रीमिथिलेश दुलारी । मधुर मधुर मूरति मनहारी ।।
जयति लाडली लाड़ लड़ाई । जननि जनक लालत लवलाई ।।
जयलक्ष्मीनिधिकीनिधीअनूपिनि ।सुखकीखानिभगिनिकृप रूपिणि।।
विलसति जनक-तनय की गोदी । भ्रातृ प्रेम की मूरति मोदी ।।
जयजय सिद्धि कुमारि ननँदा । भाभी प्रीति पगी आनन्दा ।।
मिथिला भई तोहि ते धन्या । जयति जयति मिथिलापति कन्या ।।
जयति मैथिलि मैथिल प्राणा । जीव-जीव सुख की सुख जाना ।।
कमल-कली जै तिरहुत सरकी । सुरभित प्रेम पराग अमर की ।।
भूमि तिलक तिरहुत की शोभा । श्रीस्वरूपि जय शक्ति निलोभा ।।
जयति जयति सुन्दरता सागरि । अमित माधुरी रूप उजागरि ।।
जयति जयति सुमनहु सुकुमारी । सम अतिशय नहिं जगत मझारी ।।

जयति ललित तन लावणताई । रती रमोमा बलि बलि जाई ।।
कलित काय कमनीय सुअङ्गी । जयति सुष्ठुता सोहति संगी ।।
जयति जयति श्रीकमल कोमला । पद्म गंधिनी सुखद शोभिला ।।
शारद शशिशत विजित आनने । जयति झरनि अमृत वरानने ।।
जयति चारुदँति चारु सुनेत्री । चारु अंग छवि छहरति क्षेत्री ।।
चन्दन चर्चित चारु विलोकनि । चारु हँसनि जै सुख की ओकनि ।।
भूषण वसन सुदेश सुहावनी । अंग-अंग अति आभा छावनी ।।
जयति बाल क्रीड़ा मन भायिनि । मात-पिता भ्राता सुखदायिनि ।।
सखियन सदा रमावन वारी । जयति लली मिथिलेश दुलारी ।।
सहजहिं शिव को धनुष उठाई । जयति अचिन्त्य शक्ति सुखदाई ।।
जय जय श्रद्धा भक्ति स्वरूपिणि। गिरिजहिं कीन्ह प्रसन्न अनुपिणि ।।
सफल मनोरथ हर्षित अंगी । वर पाई छवि कोटि अनंगी ।।
राम गले डारति जयमाला । जयति जानकी शोभित भाला ।।
जय रस रूपिणि राजकिशोरी । राम रसिक लहिं भई विभोरी ।।
पितु प्रदत्त निज पाणि राम को । सौंपि सखी पाई स्वधाम को ।।
आनँदमय सिय आपु विवाहा । कहि न जाय जस भयो उछाहा ।।
जय जय कहि सुर वर्षे फूला । वाद्य बजाये मंगल मूला ।।
विधि हरिहर निज शक्तिन साथा । जै जै कहै नयन भर पाथा ।।
ऋषि-मुनि सिद्ध सुस्तुति सारे । जय जय कहत वेद उच्चारे ।।
नाँच गाय अप्सरा सुहाई । जयति सिया सेवा सुखदाई ।।
पंच धुनी दश दिशि गुञ्जारी । त्रिभुवन सुखकी वितरनवारी ।।
अचरजमय प्रिय परिणयलीला । जयति जानकी सुख की शीला ।।
जयति जनकपुर विहरणवारी । जयति अवधपुर की उजियारी ।।
जय प्रमोद वन बिहरन शीला । राम प्रिया जय लावनि लीला ।।

जय जय जय अह्लादिनी सीते । राम रसिक की प्राण पिरीते ।।
जय जय जय श्रीराजकिशोरी । राज कुँवर संजीवनि मूरी ।।
रस की रस जय राज दुलारी । रसिक राम की प्राण पियारी ।।
सुख सुसिन्धु की सुखद सुआत्मा । रामवल्लभा जयति रसात्मा ।।
पतिव्रत धर्म विग्रहा प्यारी । जय जय सीता तिय उजियारी ।।
पति प्राणा जय सुभगे सीते । रामहिं प्रिय मन भावनि जीते ।।
पिय चकोर की पूरण चन्दा । जयति जानकी सुख की कन्दा ।।
सास श्वसुर की प्राण समाना । रघुकुल वधू जयति सुख साना ।।
जयति सिय की कीरति गंगा । बहति करोड़न अण्ड अभंगा ।।
जयति युगलकुल तारनि सीया । पावत पावनि यश कमनीया ।।
जय जयन्त की रक्षन वारी । जयति राक्षसी प्राण उबारी ।।
जीव उधारन हेतु अवतरी । जगत जननी के योग अनुसरी ।।
दशा विवश सहि कष्ट अमीता । पतितन तारी जयति पुनीता ।।
राम अधीन अनन्य सुव्रता । जयति कृपामयि जीव हित रता ।।
पुरुषकार पद जीवन हेती । अपनाई जय कृपा निकेती ।।
गुनि शरणागतकर गुण एका । दश करि प्रभु सो कह सविवेका ।।
निज शरीर सम्पति ते रामहिं । वशी करति जिव हेतु स्वधामहि ।।
जैसेहु कैसेहु जीवन तारी । जयति सिया सबकी महतारी ।।
पापी पुण्यी शत्रु औ मित्रा । पावति सम गति बात विचित्रा ।।
रामहु ते बड़ कृपा महानी । देखे सुने सिद्ध मुनि ज्ञानी ।।
जय करुणा करि क्षमा की आगरि । शम दमादि षट सम्पति सागरि ।।
सी के कहत हीय सुख भारी । ता कह तहि तम जाय विदारी ।।
जयति सिया निज नाम सुधन्या । जयति भूमिजा भूपति कन्या ।।
भुक्ति मुक्ति बिनु कृपा के कोई । लहैं न कोटिन यत्नहिं लोई ।।

जयति आत्म सुख वितरन वारी । जयति राम रस दानि अपारी ।।
जयति जयति शक्तिन सिर मौरी । शील स्वरूपिणि पिय रस बोरी ।।
उद्भव पालन प्रलय कहानी । भ्रू विलास तव भेद बखानी ।।
उमा रमा ब्रह्माणि अनन्ती । उपजहिं अंश जयति जगवंती ।।
चिद् विलास सिय कर संसारा । जयति जानकी जगत अधारा ।।
इच्छा ज्ञान क्रियादिक शक्ति । पर अरु अवर व्यक्त अव्यक्ति ।।
विद्याऽविद्या प्रवृत्ति प्रतिष्ठा । शान्ति उत्तमा सुमना सुष्ठा ।।
सिगरी कला सिया ते जनमै । जयति स्वामिनी सबकी तन्मै ।।
प्रणव रूपिणि प्रकृति मूला । जयति महामाया अनुकूला ।।
संवित संधिनि अरु अहलादिनी । त्रिधा शक्तिमय सबके आदिनी ।।
जयति सच्चिदानन्द स्वरूपिणि । जयति ब्रह्म चिद्शक्ति अनूपिनि ।।
जो है, रहा और जो होई । सो सब सिय स्वरूप जग जोई ।।
राम अभिन्न सत्य सत सीया । जयति जानकी जीव की जीया ।।
लीला काल भिन्न सी भासति । राम प्रिया सुख सिन्धु विलासति ।।
धारक पोषक जग की ईश्वरि । सब समर्थ सबकी सर्वेश्वरि ।।
तिहरो आदि न अंतहि पायो । सुरनर मुनि सब शीश झुकायो ।।
महिमा अमित न रामहु जानी । जय जग कारनि वेद बखानी ।।
तिहरे बिना राम की लीला । कबहुँ न बनैं कहे मुनि शीला ।।
अशरणशरणसियासुखकारिणि । जयतिजयतिजयस्ववश विहारिणि ।।
जयति त्रिताप नशावनि वारी । जयति शान्ति सुख सृजति अपारी ।।
तवपद कमल मुनिन चित भृंगा । अहर्निश पियत मधुर मकरन्दा ।।
गावत चरित वेद सब तेरो । गऊ गोहार पुकारत चेरो ।।
कर सम्पुट चरणन सिर नावौं । तृण रद गहै रोव गोहरावौं ।।
आरत विनय मोर सुन लीजै । सुकृत विलोकी यथारुचि कीजै ।।

अमित काल भटक्यौ संसारा । बांधेव बहुविधि विषय बेगारा ।।
चाहत राम सिया सेवकाई । पग तरि झारी रहौं लवलाई ।।
मंगल प्रेम को अन्न प्रसादी । पेट खलाये चहत सुस्वादी ।।
दर्शन प्यास तृषित श्री स्वामिनि । युगलस्वरूप लखौ अहलादिनि ।।
सीता राम सदा मुख तेरे । निकसत रहै सहज तव प्रेरे ।।
युगुल चरण सिर अहनिशि लागा । टरै न कबहुँ दास की माँगा ।।
प्रेमिन संग सदा सुखदाई । मिलत रहै तव कृपा भलाई ।।
भक्तन रहनि भली विधि पावौं । अहं हीन ममकार नसावौं ।।
सीय राम मय जगत विलोकी । करौं प्रणाम विगत सब शोकी ।।
चेष्टा सकल स्वभाविक मोरी । होय युगल सेवा रस बोरी ।।
जेहि विधि रहैं प्रसन्न युगलवर । सोइ करौं दीजै मोहि यह वर ।।
बसहिं सदा मोरे मन माहीं । युगल किशोर रूप सरसाही ।।

दोहा – दास रामहर्षण विनय, जनक लली सुन लेहु।
द्वार देश याचत खड़ो, भूखे भीखहु देहु।। ३ ।।
प्रेम सहित सीता शतक, पढ़ै सुनै नर नारी।
सीता राम सुप्रेम लहि, पुर साकेत सिधारी ।। ४ ।।

इति सीता शतक

ॐ नमः सीतारामभ्यां
ॐ गुं गुरवे नमः
ॐ हं हनुमते नमः

।। अथ श्रीराम शतक ।।

दो.:- जयति राम रसिकेन्द्र जय, प्राणि-पुण्य अवतार ।
मधुर-मधुर मूरति जयति, चन्द्रकीर्ति सुखसार ।।
जय रसेन्द्र रघुराजवर, शरण तिहारे आय ।।
भक्ति-भाव नव नव चहत, हृदय रहै रस छाय ।।

।। चौपाई ।।

जय-जय श्री दाशरथी रामा । जय रघुराज पुण्य सुख धामा ।।
जय जय सूर्य वंश अवतंसा । जय जय अवध सरोवर हंसा ।।
जय-जय रघुकुल कुमुद के चन्दा । शीतल सुखद अमिय रसकन्दा ।।
जय जय जयति कौशिला मण्डन । दर्श दिखाय किये मन खण्डन ।।
जय कौशिल्यानन्द के वर्धन । अंकहि क्रीड़े देवन मूर्धन ।।
जय जय दशरथ राजकुमारे । प्राणन प्राण दृगन के तारे ।।
जयति अवध के प्राण अधारा । जीव जीव सुख के सुख सारा ।।
जय भरताग्रज भरत विभोरे। जयति राम भरतहिं सब वारे ।।
जय सौमित्र के सर्वस स्वामी। । सेवक सुखद नयन पथ गामी ।।
जय रिपुहन के पूजित भ्राता । सबहि भाँति बन्धुन सुख दाता ।।
बाल विनोद सबहिं सुख दीन्हें । जयति राम चित कर्षण कीन्हे ।।
गुरुहिं सेइ विद्या सब पाये । जयति राम गुरु भक्ति सिखाये ।।
गुरु आज्ञा ताड़क बध कीन्हे । गुरु प्रसन्न सब शस्त्रन दीन्हें ।।
गाधि तनय मख राखन वारे । जयति राम राक्षस संहारे ।।
पद रज अहह अहिल्या तारी । जयति राम सुर मुनिन पुकारी ।।

जयति जनक पुर बिहरन शीला । कीन्हे तहाँ नित्य नव लीला ।।
सर्वस सौंपि बिके पुरवासी । जयति राम निज प्रेम में फाँसी ।।
फूल वाटिकहिं सीतहिं देखी । पाये स्वयं आनन्द विशेषी ।।
धनुष भंग करि सियहि विवाही । जयति राम अति भयो उछाही ।।
दूलह वेष भव्य भल भ्राजै । श्याम शरीर चन्द्र शत लाजै ।।
पुंसा मोहन रूप ललामा । जयति मदन मर्दत अभिरामा ।।
शक्ति सहित विधि हरि हर आये । दूलहिं देखि बहुत सुख पाये ।।
जय सीता पति प्राण अधारे । जयति जनकजा प्रीतम प्यारे ।।
जय जय कोहबर कुंज बिहारी । सुख सुषमा श्रृंगार अपारी ।।
जय लक्ष्मी निधि के बहनोई। जयति सिद्धि के प्रिय ननदोई ।।
जय जय जनक सुवन के प्यारे । प्राण प्राण सुख के सुख सारे ।।
जनक सुनैना के जमाता । जय जय राम श्वसुर सुखदाता ।।
दम्पति पाहुन प्राणन प्राणा । जयति श्याम सुन्दर भगवाना ।।
जय रस रूप रसहिं के दायक । जयति राम रसिकन के नायक ।।
जय मिथिला मन मोहन प्यारे । जय पुर वासिन के दृग तारे ।।
जय जय चित्रकूट के वासी । कामद गिरि के जयति विलासी ।।
जय जयन्त के प्राण प्रदाता । शरणागत रक्षक जन त्राता ।।
जयति मुनिन के अतिथि महाने । जयति राम शुचि साधु बखाने ।।
अभय दानि जय रघुकुल राजा । सुर नर मुनिन की राखी लाजा ।।
भुज उठाइ प्रण कीन्हे रामा । निशिचर हीन करौं महि छाया ।।
हनि विराध यम पुरी पठाये । जयति राम सुर मुनियन भाये ।।
जय जय पंचवटी कुटि वासा । सूर्पणखा की काटी नासा ।।
चौदह सहस दैत्य सँग लीन्हे । खर दूषण त्रिसिरा वध कीन्हे ।।
जय जय कहत सुमन करि वर्षा । सुर समाज लखि रामहिं हर्षा ।।

जय जय गीध सराध के कर्ता । जय कबन्ध के प्राणन हर्ता ।।
शबरी पूजित जय रघुबीरा । सौलभ पूर्ण भक्ति प्रिय धीरा ।।
जय जय पवन तनय के स्वामी । जय सुग्रीव मित्र सुख धामी ।।
एक बाण मारे प्रभु बाली । जयति राम संतन सुखशाली ।।
जयति सिन्धु में सेतु बँधाया । जयति राम कपि सेन सहाया ।।
जयति सकल रावण रण मारे । सुरपति सहित भूमि भय हारे ।।
सुर समूह जय जयति उचारे । वर्षि सुमन स्तुति अनुसारे ।।
जयति विभीषण राज के दाता । जय शरणागत वत्सल जनत्राता ।।
जयति पुष्पकारूढ़ श्री रामा । भरतहिं भेंटि लहे विश्रामा ।।
जय जय सिंहासन आसीना । छत्र चमर सिर दुरत नवीना ।।
जयति सियासह शाशत त्रिभुवन । जय जय राम सोह युत अनुजन ।।
त्रेतहिं सतयुग कीन्हे रामा । सब विधि सबै बने सुख धामा ।।
जय सीतापति ज्ञान अखण्डा । अच्युत वीर्य करहिं कोदण्डा ।।
सुरमुनि सेवित आनँद कन्दा । त्रिभुवन के स्तुत्य स्वछन्दा ।।
सर्व लोक प्रिय जय रघुनन्दन । दुष्ट दलन संतनसुख कन्दन
जय जय ब्रह्म अजित भुवनेश्वर । काल काल जय जय परमेश्वर ।।
उपजहि अंश अमित विधि हरि हर । जयति राम जय जय श्रीरघुवर ।।
कारण कार्य परे भगवाना । परब्रह्म परमात्म सुजाना ।।
जयति परावर परे परेशा । प्रकृति पार जय जय अवधेशा ।।
सत अरु असत पार रघुराया । निर्गुण सगुण विशेषण काया ।।
सूक्ष्म थूल ते हौ प्रभु पारा । जयति राम परमारथ सारा ।।
चिदानन्दमय देहहिं धारे । जयति सच्चिदानन्द खरारे ।।
भास मात्र जय परम सुज्योती । रवि शशि अग्नि तहाँ उद्योती ।।
अणु ते अणु अरु महत महाना । जय विराट व्यापक भगवाना ।।

जय जय त्रिपुटी हीन स्वरूपा । जयति अनिर्वच अगम अनूपा ।।
मायातीत तुरीया तीता । वेद-वेद्य परमारथ गीता ।।
अनुभवगम्य भगत अधीना । जयति राम रक्षत गुनि दीना ।।
तत् त्वमऽसि के लक्ष्य अनन्ता । जय रस रूप सिया के कन्ता ।।
जयति राम जहँ योगी रमहीं । नित्यानन्द हृदय अनुभवहीं ।।
प्रणवराम तब वाचक अहहीं । जयति राम श्रुति शास्त्रहुँ कहहीं ।।
जय सर्वाश्रय सब के स्वामी । घट घट के जय अन्तर यामी ।।
विश्वरूप जय जगत अधारा । जयति निरञ्जन निःआकारा ।।
मायापति जय निर्लेप अमाना । अज अनवद्य अखण्ड विज्ञाना ।।
द्वैताद्वैत शून्य सर्वेश्वर । जयति राम सबके हृदयेश्वर ।।
हृषीकेश उर प्रेरक रामा । कर्तृ भोक्तृ ज्ञातृहु गुण धामा ।।
चिद्विलास जग तिहरीलीला । सच्चिन्मयी जान शुभ शीला ।।
जय जय जय तारक प्रभु सत्या । भेद न पावहिं कोउ जगवत्या ।।
जय जय शिवके सर्वस रामा । जयति मुनिन दायक विश्रामा ।।
जयतिपूज्य विधि हरिहर हूके । जयति इष्ट सब शक्तिन जू के ।।
सर्व सर्व तनु ब्रह्म सनातन । सर्व नाम जय पुरुष पुरातन ।।
सर्व भाव स्थित इक आपै । जयति राम जय अमित प्रतापै ।।
जासु नामयश महत महाना । शिव उपदेशत मुक्ति विधाना ।।
जयति राम सर्वस्व हमारे । दास राम हर्षण सब वारे ।।
जय जय सर्वलोक शारण्या । रक्षत सकृत प्रणाम वरण्या ।।
कहत तवास्मि अभय करि दीन्हे । जयति राम अनुपम व्रत लीन्हे ।।
मारन योग जयन्तहि राखे । अचरज मानि जयति सब भाखे ।।
अपराधिहु पर कबहुँ न कोपे । करत भलाई दुर्गुन गोपे ।।

जयति क्षमा मन्दिर रघुवीरा । सब समर्थ जय जय मति धीरा ।।
जयति कृपा करुणा के आगर । दया सिन्धु जय गुण के सागर ।।
जयति अमित वात्सल्य निधाना । जय सौशील्य गेह सुख साना ।।
जयति हेयगुण रहित सुजाना । श्रेय स्वरूप जयति भगवाना ।।
जयति भक्त मन वांछित दाता । रसिक क्ल्पतरु सेवक त्राता ।।
राम समान राम रघुनन्दन । अनुपमेय आनँद चित चन्दन ।।
श्रवण सुयश सुनि शरणहिं आयो । त्राहि त्राहि द्वारे गोहरायो ।।
तृण रद गहे दीन ते दीना । चरण परेव व्याकुल मन खीना ।।
रक्षहु राम गरीब नेवाजा । अबकी बार राखु मम लाजा ।।
रक्षण-फल आपुहिं को स्वामी । मोरे हेतु न होय स्वधामी ।।
स्वकिय प्राप्ति के स्वयं उपाया । अहैं नाथ सद ग्रन्थन गाया ।।
सो सब करहु करावहु प्यारे । चहत प्रेम परमारथ पारे ।।
जयति उदार शिरोमणि रामा । देहु याचकहिं भीख ललामा ।।
चितइ कृपा कोरनि मम ओरा । कहियो एक बार तैं मोरा ।।

दो०— सब विधि हर्षण की बनै, सेवत पाँवरि प्यार ।
जूठन दूकहिं पाय के, पड़ो रहौं प्रभु द्वार ।।
राम शतक को पाठ करि, लहैं राम रस लोग ।
प्रेम पात्र प्रभु को बनैं, नाशै कठिन कुयोग ।।

।। इति श्रीराम शतक ।।

अनन्त श्री विभूषित श्री स्वामी रामहर्षणदासजी महाराज द्वारा विरचित

अमूल्य भक्ति साहित्य :-

१. श्री प्रेम रामायण
२. वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र)
३. औपनिषद ब्रह्मबोध
४. उपदेशामृत
५. विशुद्ध ब्रह्मबोध
६. गीता ज्ञान
७. वैदेही दर्शन
८. मिथिला माधुरी
९. हर्षण सतसई
१०. वैष्णवीय विज्ञान
११. सिद्धि स्वरूप वैभव
१२. रस चन्द्रिका
१३. प्रपत्ति प्रभा [illegible]त्र
१४. पंचशतक
१५. विनय वल्लरी
१६. प्रेम वल्लरी
१७. विरह वल्लरी
१८. लीला–सुधा सिन्धु
१९. ध्यान वल्लरी
२०. विवाहाष्टक
२१. आत्म विश्लेषण
२२. श्री सिद्धि सदन की अष्टयामीय सेवा
२३. लीला विलास
२४. चिदाकाश की चिन्मयी लीला
२५. रामराज्य

पुस्तक प्राप्ति का स्थान :-

प्रकाशन विभाग श्रीरामहर्षण कुञ्ज

परिक्रमा मार्ग, नयाघाट

श्री अयोध्या जी